Toppersnotes
Unleash the topper in you

राजस्थान–पटवार

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड

भूगोल एवं राजनीति

SIERRA INNOVATIONS
Private Limited

भारतीय भूगोल

1. भारत की स्थिति व विस्तार 1
2. भारत के भौगोलिक भू-भाग 5
3. भारतीय मानसून 28
4. उष्ण कटिबन्धीय चक्रवात 34
5. भारत का अपवाह तंत्र 34
6. भारत में प्राकृतिक वनस्पति 44
7. जैव विविधता 48
8. भारत की मिट्टी/मृदा 51
9. जलवायु 55
10. भारत में खनिज वितरण 64
11. भारत के प्रमुख उद्योग 73
12. परिवहन तंत्र 78

राजस्थान भूगोल

1. राजस्थान की उत्पत्ति, स्थिति व विस्तार 83
2. राजस्थान के ऐतिहासिक व भौगोलिक स्थानों की वर्तमान स्थिति 91
3. राजस्थान के भौतिक प्रदेश व विभाग 95
4. राजस्थान की जलवायु 115

5. राजस्थान में मृदा संसाधन 124
6. राजस्थान में वन-संसाधन व वनस्पति 127
7. राजस्थान में खनिज सम्पदा 133
8. ऊर्जा के स्त्रोत 142
9. राजस्थान में पशुधन 147
10. राजस्थान में कृषि 154
11. राजस्थान की जनसंख्या 160
12. राजस्थान में वन्य जीव व इनका संरक्षण 164
13. राजस्थान की जलविद्युत परियोजनाएं 171
14. राजस्थान गैस, परमाणु व तरल ईंधन आधारित योजनाएं 175
15. अपवाह तंत्र 180
16. राजस्थान की झील 193
17. सिंचाई परियोजना 198

राजनैतिक विज्ञान

1. संविधान की पृष्ठभूमि 205

2. संविधान के स्त्रोत 208

3. अनुसूचियां 210

4. संविधान के भाग 212

5. भारतीय संविधान की प्रस्तावना 213

6. संघ व उसका राज्यक्षेत्र 216

7. भारत का एकीकरण 217

8. राज्यों का पुनर्गठन 217

9. मौलिक अधिकार 219

10. राज्य के नीति निदेशक तत्व 233

11. मौलिक कर्तव्य 234

12. संघ – कार्यपालिका, विधायिका, न्यायपालिका 239

13. आपातकालीन उपबंध 282

14. केन्द्र–राज्य संबंध 289

15. पंचायती राजव्यवस्था 296

16. संविधान की विशेषताएं 299

17. महत्वपूर्ण संविधान संशोधन 302

18. जिला प्रशासन 305

19. जिला कलेक्टर 306

20. उपखण्ड अधिकारी 308

21. तहसीलदार 309

22. नायब तहसीलदार 311
23. कानूनगो/गिरदावर 311
24. पटवारी 312
25. राजस्थान लोक सेवा आयोग 313
26. राज्य मानवाधिकार आयोग 315
27. लोकायुक्त 317
28. राज्य निर्वाचन आयोग 318

भारतीय भूगोल
(Indian Geography)

भारत का विस्तार

- भारत का अक्षांशीय तथा देशान्तरीय विस्तार लगभग 30° है परन्तु भारत में उत्तर से दक्षिण तक की दूरी, पूर्व से पश्चिम की दूरी से अधिक है क्योंकि ध्रुवीय क्षेत्रों की ओर बढ़ने पर देशान्तर के बीच दूरी कम होती जाती है । परन्तु अक्षांशों के बीच दूरी समान रहती है ।
- भारत का क्षेत्रफल = 3287263 किमी.^{2} = लगभग 32.8 लाख किमी.^{2}
- विश्व के कुल क्षेत्रफल का 2.4% भारत का क्षेत्रफल है ।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का विश्व में 7th स्थान है ।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से अधिकतम क्षेत्रफल वाले देश–
  - **Russia**
  - **Canada**
  - **China**
  - **USA**
  - **Brazil**
  - **Australia**
  - **India**
  - **Argentina**
  - **Kazakhstan**
  - **Algeria**

- भारत की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 121 करोड़ है जो विश्व की जनसंख्या का 17.5% है ।
- जनसंख्या के आधार पर विश्व में भारत का दूसरा स्थान है ।

Impact of Latitude:-

- भारत का अक्षांशीय विस्तार 30° होने के कारण भारत में जलवायु, मृदा तथा वनस्पति से संबंधित विविधता पाई जाती है ।
- कर्क रेखा भारत को दो प्रमुख भागों में बाँटती है– भारत का दक्षिणी भाग ऊष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में तथा उत्तरी भाग शीतोष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में स्थित है ।
- फिर भी भारत में ऊष्ण कटिबन्धीय मानसून जलवायु पाई जाती है क्योंकि उत्तर में स्थित हिमालय पर्वत साइबेरिया से आने वाली ठण्डी पवनों को रोकता है ।
- कर्क रेखा भारत के निम्नलिखित राज्यों से गुजरती है ।
  - **Gujarat**
  - **Rajasthan**
  - **Madhya Pradesh**
  - **Chhattisgarh**
  - **Jharkhand**
  - **West Bengal**
  - **Tripura**
  - **Mizoram**

Impact of Longitudinal Extension:-

- भारत का देशान्तरीय विस्तार 30° होने के कारण भारत के सबसे पूर्वी तथा पश्चिमतम भाग के बीच 2 घंटे का अन्तर पाया जाता है ।
- 82½°E देशान्तर को भारत की स्थानीय समय गणना के लिए एक मानक देशान्तर के रूप में चुना गया है ।
- भारत का समय **GMT** से 5½ घंटे आगे है ।
- 82½°E निम्नलिखित राज्यों से गुजरती है:-
- **Uttar Pradesh**
- **Madhya Pradesh**
- **Chhattisgarh**
- **Odisha**
- **Andhra Pradesh**

- 2007 में **National Institute of Advanced Studies** ने उत्तर पूर्व के समय को आधा घंटा आगे करने का सुझाव था अतः इस सुझाव पर अमल किया जा सकता है ।

Border of India:-

1. स्थलीय सीमा:-

- भारत की स्थलीय सीमा लगभग 15200 किमी. (15106.7 किमी.) है ।
- भारत की स्थलीय सीमा निम्न देशों को स्पर्श करती है:-

(i). Bangladesh = 4096.7 km
(ii). China = 3488 km
(iii). Pakistan = 3323 km
(iv). Nepal = 1751 km
(v). Myanmar = 1643 km
(vi). Bhutan = 699 km
(vii). Afghanistan = 106 km

- भारत-पाकिस्तान सीमा रेखा = रेडक्लिफ रेखा
- भारत-चीन सीमा रेखा = मैकमोहन
- भारत-अफगानिस्तान सीमा रेखा = डूरन्ड रेखा

2. जलीय सीमा:-

- भारत की जलीय सीमा = 7516.6 किमी.
  Mainland = 5422.6 km & Island = 2094 km
- सर्वाधिक तटीय सीमा वाले राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश:-
  - Andaman & Nicobar
  - Gujarat
  - Andhra Pradesh
  - Tamilnadu
  - Maharashtra
  - Kerala
  - Odisha
  - Karnataka
  - West Bengal
  - Lakshadweep
  - Goa
  - Puducherry
  - Daman & div

तटवर्ती/सीमावर्ती सागर:-

1. सीमावर्ती सागर **(Territorial Sea)**
2. संलग्न सागर **(Contiguous Sea)**
3. अनन्य आर्थिक क्षेत्र **(Exclusive Economic Zone)**

1. सीमावर्ती सागर:-

- यह क्षेत्र आधार रेखा से 12**nm** तक स्थित है ।
- इस क्षेत्र में भारत का एकाधिकार है ।

2. संलग्न सागर:-

- यह क्षेत्र आधार रेखा से 24**nm** तक स्थित है ।
- इस क्षेत्र में भारत के पास वित्तीय अधिकार है ।
- यहाँ भारत सीमा शुल्क **(Custom Duty)** वसूल सकता है ।

3. अनन्य आर्थिक क्षेत्र:-

- यह क्षेत्र आधार रेखा से 200**nm** तक स्थित है।
- इस क्षेत्र में भारत के पास आर्थिक अधिकार है तथा यहाँ भारत संसाधनों का दोहन, द्वीप निर्माण तथा अनुसंधान आदि कर सकता है ।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

<u>उच्च सागरः-</u> यहाँ सभी देशों का समान अधिकार होता है ।

- भारतीय उपमहाद्वीप में निम्नलिखित देश सम्मिलित हैः-
  - **INDIA**
  - **Pakistan**
  - **Afghanistan**
  - **Nepal**
  - **Bhutan**
  - **Bangladesh**
  - **Shri Lanka**
  - **Maldives**

Toppersnotes
Unleash the topper in you

भारत के भौगोलिक भू–भाग

(Physiography Devision of India)

भारत के भौगोलिक भू–भागः–

1. **Himalayan Mountain Region**
2. **Northern Plain Region**
3. **Peninsula Plateau Region**
4. **Coastal Plain Region**
5. **Island Groups Region**

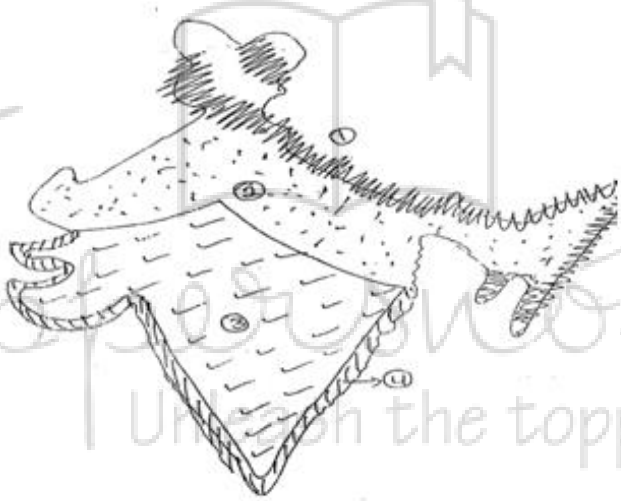

1. हिमालय पर्वतीय प्रदेशः–

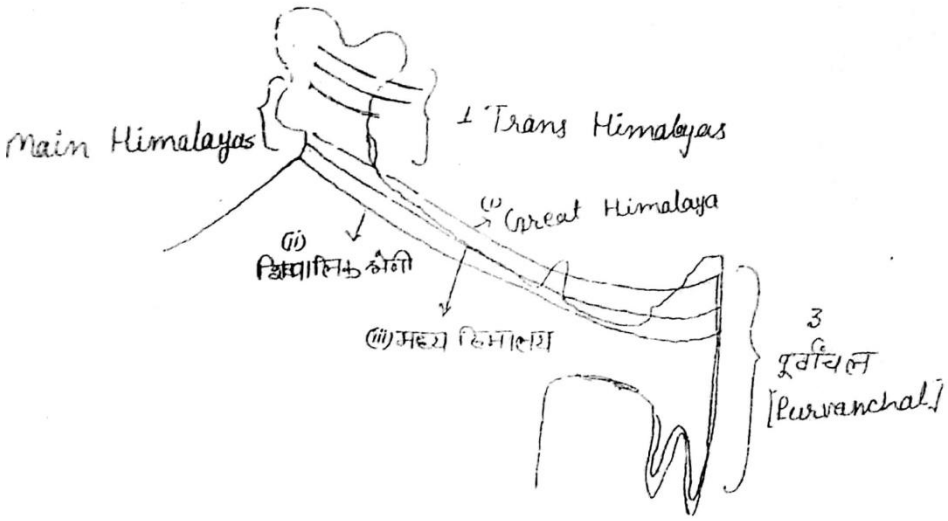

- भारत के उत्तरी सीमा पर स्थित पर्वत तंत्र हिमालय पर्वतीय प्रदेश का निर्माण करता है ।
- इस पर्वत तंत्र का निर्माण नवीन वलित पर्वतों से हुआ है ।
- ये वलित पर्वत 'यूरेशियन प्लेट' तथा 'भारतीय प्लेट' के अभिसरण से निर्मित हुए हैं ॥
- क्योंकि इस पर्वत तंत्र का निर्माण टरशरी काल में हुआ है, इसलिए इसे 'टर्शयरी पर्वत तंत्र' भी कहा जाता है । **Tertiary Period** (टर्शयरी काल) = (70 मिलियन वर्ष–11 मिलियन वर्ष पूर्वतक)
- यह पर्वत तंत्र विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत तंत्र है, इसलिए इस तंत्र में बहुत से अल्पाइन हिमनद भी पाये जाते है ।
- भारत की सबसे प्रमुख नदियों का उदगम इसी पर्वत पर स्थित हिमनदों से होता है ।
- इस पर्वतीय प्रदेश को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है:–

A. <u>Trans Himalaya:-</u>

हिमालय पर्वतीय प्रदेश का सबसे उत्तरी भाग ट्रांस हिमालय कहलाता है ।

- यह मुख्य रूप से 'जम्मू–कश्मीर' व 'तिब्बत' में स्थित है ।
- मुख्य हिमालय के वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित होने के कारण यहाँ शुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है ।
- इस भाग में तीन प्रमुख पर्वत श्रेणियाँ पाई जाती है:–

(a) काराकोरम श्रेणी:–

- ट्रांस हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी।
- ट्रांस हिमालय की सबसे लम्बी व ऊँची श्रेणी है ।
- 'माउण्ट गोडविन ऑस्टिन' इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है, जो कि भारत की सबसे ऊँची तथा विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है । (8611 किमी.)
- यह श्रेणी अपने अल्पाइन हिमनदों के लिए विख्यात है:–

1. बतुरा
2. हिस्पार
3. बियाको
4. बालतोरो
5. सियाचिन

- सियाचिन हिमनद' नुबरा घाटी में स्थित है तथा इस हिमनद के पिघलने से नुबरा नदी का उदगम होता है, जो कि सिन्धु की सहायक नदी है ।

(b) <u>लद्दाख श्रेणी:–</u>

- काराकोरम श्रेणी के दक्षिण में स्थित।
- तिब्बत में इस श्रेणी का विस्तार 'कैलाश पर्वत' के नाम से जाना जाता है ।
- तिब्बत में इस श्रेणी के दक्षिण में 'मानसरोवर झील' स्थित है ।
- 'एकापोशी चोटी' इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है ।

(c) जास्कर श्रेणी:-

- ट्रांस हिमालय की सबसे दक्षिणी श्रेणी ।
- जास्कर तथा लद्दाख श्रेणी के मध्य सिन्धु घाटी स्थित है ।

Note:- लद्दाख पठार:-

- काराकोरम श्रेणी तथा लद्दाख श्रेणी के मध्य स्थित अन्तः पर्वतीय पठार ।
- इस पठार की ऊँचाई लगभग 4800 मीटर है, तथा यह भारत का सबसे ऊँचा पठार है ।
- वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित होने के कारण इस पठार पर शुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है, इसलिए यह एक 'ठण्डे मरूस्थल' का उदाहरण है ।
- इस पठार पर बहुत सी खारे पानी की झील पाई जाती है ।

B. Main Himalaya:-

- यह पर्वतीय प्रदेश का दूसरा प्रमुख भाग है ।
- यह भाग सिन्धु नदी घाटी से ब्रह्मपुत्र नदी घाटी तक स्थित है ।
- इस भाग के दोनों ओर अक्षसंधीय मोड **(Systaxial Bend)** पाया जाता है ।
- इस भाग भाग की चौडाई पश्चिमी भाग में अधिक तथा पूर्वी भाग में कम है ।
- यह लगभग 2400 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- इस भाग में तीन प्रमुख श्रेणियाँ है:-

(i). वृहत हिमालय **(Great Himalaya)**
(ii). मध्य हिमालय **(Middle Himalaya)**
(iii). शिवालिक **(Shivalik)**

(a). वृहत हिमालय(Great Himalaya):-

- यह श्रेणी नंगा पर्वत से नामचा बरवा के बीच स्थित है ।
- यह 2400 किमी. की दूरी से विस्तृत है तथा इसकी औसत चौडाई 25 किमी. एंव औसत ऊँचाई 6100 मी. है ।
- ऊँचाई अधिक होने के कारण यह पर्वत वर्ष भर बर्फ से ढका रहता है अतः इसे हिमाद्री भी कहा जाता है ।
- यह विश्व की सबसे ऊँची पर्वत श्रेणी है ।
- इस श्रेणी में विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउण्ट एवरेस्ट (8848 मी.) स्थित है ।
- माउण्ट एवरेस्ट नेपाल-चीन सीमा पर स्थित है ।
- इसे नेपाल में सागरमाथा कहते है । (माउण्ट एवरेस्ट को)
- इस पर्वत पर बहुत से प्रमुख हिमनद स्थित है । **e.g.-** गंगोत्री, यमुनोत्री, सतोपंथ, पिंडारी, मिलान **etc.**
- इस श्रेणी में बहुत से दर्रे है जिन्हे । स्थानीय भाषा में 'ला' कहा जाता है ।
- वृहत हिमालय के प्रमुख दर्रे:-

- **Burzila**
- **Zajila**
- **Baralachha**
- **Shipkila**
- **Mana**
- **Niti**
- **Lipu Lekh**
- **Nathula**
- **Jaleepla**
- **Bomdil**

(i). बुर्जिला दर्रा:–

* यह श्रीनगर को **POK** से जोडता है ।
* इस दर्रे के माध्यम से घुरूपैठ गतिविधियाँ होती है ।

(ii). जोजिला दर्रा:–

* यह दर्रा श्रीनगर को लेह से जोडता है ।
* इस दर्रे से **NH-1D** गुजरता है ।

(iii). बारालच्छा दर्रा:– यह दर्रा हिमाचल प्रदेश को लेह से जोडता है ।

(iv). शिपकिला दर्रा:–

* यह दर्रा हिमाचल प्रदेश को तिब्बत से जोडता है ।
* इस दर्रे का निर्माण सतलज नदी द्वारा किया गया है ।
* इसी दर्रे के माध्यम से सतलज नदी भारत में प्रवेश करती है ।
* इस दर्रे के माध्यम से चीन के साथ व्यापार किया जाता है ।

(v). माना:– यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है ।

(vi). नीति:– यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है ।

(vii). लिपुलेख दर्रा:–

* यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है ।
* इस दर्रे के माध्यम से कैलाश मानसरोवर की यात्रा की जाती है । अतः इसे 'मानसरोवर का द्वार' भी कहा जाता है ।
* इस दर्रे के माध्यम से चीन के साथ व्यापार किया जाता है ।

(viii). नाथूला दर्रा:–

* यह दर्रा सिक्किम को तिब्बत से जोडता है ।
* इस दर्रे से प्राचीन रेशम मार्ग गुजरता था।
* इस दर्रे का उपयोग चीन के साथ व्यापार एवं कैलाश मानसरोवर की यात्रा के लिए किया जाता है
* मानसरोवर की यात्रा इस दर्रे के माध्यम से अधिक सुगम होती है ।

(ix). जलीपला दर्राः– यह दर्रा सिक्किम को तिब्बत से जोडता है ।

(x). बोमडिला दर्राः– यह दर्रा अरूणाचल प्रदेश को तिब्बत से जोडता है ।

(b). मध्य हिमालय (Middle Himalaya):-

- इसे हिमाचल हिमालय या लघु हिमालय भी कहते हैं ।
- यह श्रेणी 2400 किमी. की दूरी में विस्तरत है ।
- इसकी औसत चौडाई 50 किमी. है ।
- इस श्रेणी की ऊँचाई लगभग 3700–4500 मी. के बीच पाई जाती है ।
- इस श्रेणी के विभिन्न स्थानीय नाम हैः–
- **J & K – Pir Panjal**
- **Himachal Pradesh – Dhauladhar**
- **Uttarakhand - Mussoorie/Nag Tibba**
- **Nepal – Mahabharat**
- **Sikkim – Dokya**
- **Bhutan – Black Mountain**

- मध्य हिमालय तथा वृहत हिमालय के बीच बहुत सी घाटियाँ स्थित हैः–
- कश्मीर घाटी = वृहत हिमालय – पीर पंजाल
- कुल्लू घाटी = वृहत हिमालय – धौलाधर
- कांगडा घाटी **(HP)** = वृहत हिमालय – मसूरी
- काठमांडू घाटी = वृहत हिमालय – महाभारत

- इस श्रेणी पर ग्रीष्म ऋतु में शीतोष्ण कटिबन्धीय घास के मैदान पाए जाते है ।, जिन्हे । जम्मू कश्मीर मे 'मर्ग' तथा उत्तराखण्ड मे 'बुग्याल, पयाला' कहा जाता है ।
- शीत ऋतु के दौरान यह श्रेणी बर्फ से ढक जाती है ।
- इस श्रेणी पर स्थित घास के मैदानों का उपयोग स्थानीय समुदाय अपने पशुओं को चराने के लिए करते है ॥
- इस श्रेणी क्षेत्र में बहुत से पर्यटन स्थल पाए जाते है ॥ **e.g.** कुल्लू, मनाली, नैनीताल, मसूरी **etc.**
- इस श्रेणी में कुछ प्रमुख दर्रे पाए जाते है :–

1 पीरपंजाल दर्राः–यह दर्रा श्रीनगर को **POK** से जोडता है ।

2 बनिहाल दर्राः– श्रीनगर को जम्मू से जोडता है, **NH-1A** इस दर्रे से गुजरता है । इस दर्रे में जवाहर सुरंग स्थित है ।

ऋतु प्रवास (Transhumance):-

- ऋतुओं में होने वाले परिवर्तन के साथ जब स्थानीय समुदाय अपने पशुओं के साथ चारे तथा जल की तलाश/खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान तक पलायन करते हैं ।, उसे ऋतु प्रवास कहा जाता है ।
- जम्मू–कश्मीर में गुर्जर तथा बकरवाल समुदाय ऋतु प्रवास करते हैं ॥
- ग्रीष्म ऋतु के दौरान ये पर्वतों की ओर तथा शीत ऋतु में घाटी क्षेत्र की ओर पलायन करते हैं ॥

करेवा (Karewa):-

- पीरपंजाल श्रेणी के निर्माण के कारण कश्मीर घाटी क्षेत्र में अस्थायी झीलों का निर्माण हुआ जो नदियों द्वारा लाए गए अवसादों से भर गई तथा इन्हीं अवसादों को करेवा कहते हैं ॥
- करेवा कश्मीर घाटी क्षेत्र में पाए जाने वाले उपजाऊ हिमनद, नदी एवं झील के अवसाद **(Glacial, Riverine & Lacustrine)** हैं ॥ इस अवसादों का उपयोग केसर व चावल की खेती के लिए किया जाता है ।

(C) शिवालिक (Shivalik):-

- शिवालिक श्रेणी की ऊँचाई 500–1500 मी. के बीच पाई जाती है ।
- इसकी चौडाई 10–50 किमी. है ।
- शिवालिक को विभिन्न स्थानीय नामों से जाना जाता है:–
  - **J & K – Jammu Hills**
  - **Uttarakhand – Dudwa/Dhang** (दूदवा/धांग)
  - **Nepal – Churiaghat** (चूडियाघाट)
  - **A.P. – Dafla** (दाफला)
  - **Miri** (मिरी)
  - **Abhor** (अबोर)
  - **Mishmi** (मिश्मी)

- शिवालिक श्रेणी के निर्माण के दौरान मध्य हिमालय तथा शिवालिक श्रेणी के बीच अस्थाई झीलों का निर्माण हुआ था।
- यह झीलें कालान्तर में अवसादों से भर गईं जिससे समतल घाटियों का निर्माण हुआ।
- इन घाटियों को पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में **'दून'** तथा पूर्वी हिमालय क्षेत्र में **'द्वार'** कहते हैं ॥
  e.g.- देहरादून, कोटलीदून, पाटलीदून, हरिद्वार, निहांगद्वार **etc.**
- इन घाटियों का उपयोग चावल की खेती के लिए किया जाता है ।

चोस (Chos):-

- हिमाचल प्रदेश तथा पंजाब में स्थित शिवालिक श्रेणी क्षेत्र में मानसून के दौरान अस्थायी धाराओं का निर्माण होता है, जिन्हें । स्थानीय भाषा में चोस कहते हैं ॥

- यह धाराएँ शिवालिक को विभिन्न भागों में विभाजित कर देती है ॥

C. पूर्वांचल (Purvanchal):-

- उत्तर-पूर्वी राज्यों में उत्तर से दक्षिण की ओर विस्तृत पहाड़ियों को पूर्वांचल कहते है ॥
- पूर्वांचल का निर्माण इण्डो-ऑस्ट्रेलियन तथा बर्मा प्लेट के अभिसरण से हुआ है ॥
- यह बालू पत्थर से निर्मित पहाड़ियाँ है ।
- दक्षिण-पश्चिम मानसून पवनों द्वारा यहाँ भारी वर्षा प्राप्त होती है अतः यहाँ बहुत अधिक जैव-विविधता पाई जाती है ।
- यह विश्व के 36 **Hotspots** में सम्मिलित है ।
- नागा पहाड़ियों की सबसे ऊँची चोटी सरमती है ।
- मिजो पहाड़ियों को लुशाई पहाड़ियाँ भी कहते है ।
- मिजो पहाड़ियों की सबसे ऊँची चोटी ब्लू माउण्टेन है ।
- बराइल श्रेणी नागा पहाड़ियों एवं मणिपुर पहाड़ियों को अलग करती है ।

हिमालय पर्वतीय प्रदेश का प्रादेशिक विभाजनः-

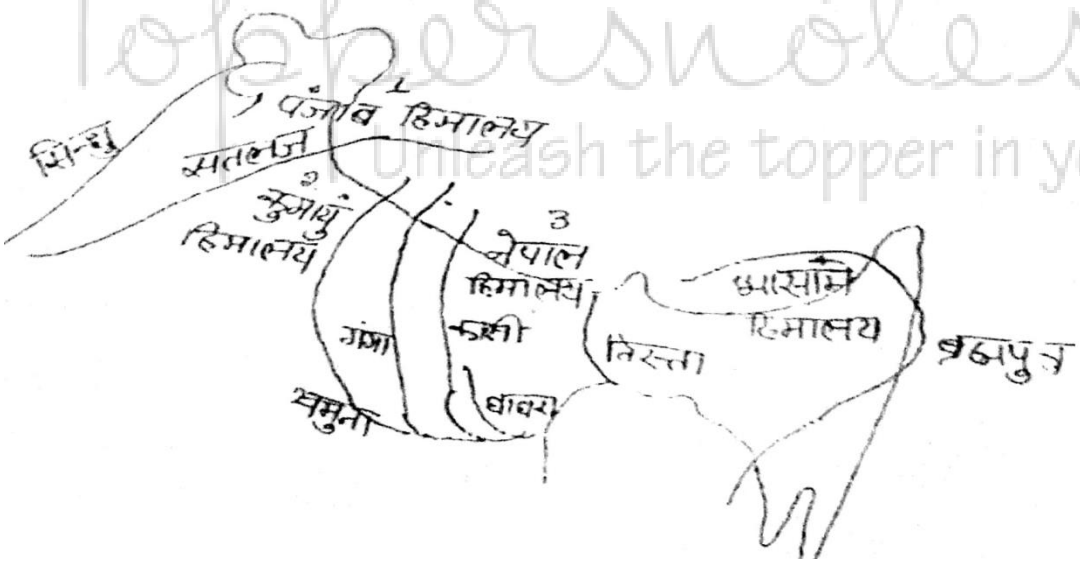

(a). कश्मीर/पंजाब हिमालय (Kashmir/Punjab Himalaya):-

- हिमालयका यह भाग सिंधु तथा सतलज नदी के बीच स्थित है ।
- यह लगभग 560 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।

- इस भाग में जास्कर, पीरपंजाल श्रेणी एवं जम्मू पहाडियाँ स्थित है ।
- इस भाग में हिमालय की चौडाई सर्वाधिक पाई जाती है । जो लगभग 250–400 किमी. के बीच पाई जाती है ।
- यहाँ हिमालय की ऊँचाई क्रमिक रूप से बढने लगती है ।

(b). कुमायूँ हिमालय **(Kumao Himalaya):-**

- हिमालयका यह भाग सतलज से काली नदी के बीच स्थित है ।
- यह 320 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- यह भाग मुख्य रूप से उत्तराखण्ड में स्थित है ।
- यहाँ कुछ प्रमुख चोटियाँ स्थित है । **e.g.-** नंदा देवी, केदारनाथ, बद्रीनाथ, कामेट, त्रिशुल ।

(c). नेपाल हिमालय **(Nepal Himalaya):-**

- यह भाग काली तथा तिस्ता नदी के बीच स्थित है।
- यह भाग 800 किमी. की दूरी में विस्तृत है।
- इस भाग में हिमालय की ऊँचाई सर्वाधिक पाई जाती है।
- यहाँ कई प्रमुख ऊँची चोटियाँ पाई जाती है।**e.g.-** माउण्ट एवरेस्ट, कंचनजंगा (8598 मी.)
- यहाँ हिमालय की चौडाई अत्यधिक कम हो जाती है।

(d). असम हिमालय **(Assam Himalaya):-**

- यह भाग तिस्ता से दिहांग नदी के बीच स्थित है।
- यह 720 किमी. की दूरी में विस्तृत है।
- यहाँ हिमालय की चौडाई सबसे कम हो जाती है जो लगभग 150 किमी. हो जाती है।
- इस भाग में हिमालय की ऊँचाई क्रमिक रूप से कम होने लगती है।

2. उत्तरी मैदानी प्रदेशः–

- इस मैदानी प्रदेश का निर्माण नदियों द्वारा जमा किए गए अवसादों से होता है ।
- यह विश्व के सबसे विस्तृत जलोढ मैदान है ।
- यह भारत का नवीनतम प्रदेश है ।
- इस अत्यधिक उपजाऊ मैदान का उपयोग कृषि के लिए किया जाता है तथा यहाँ सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व पाया जाता है ।

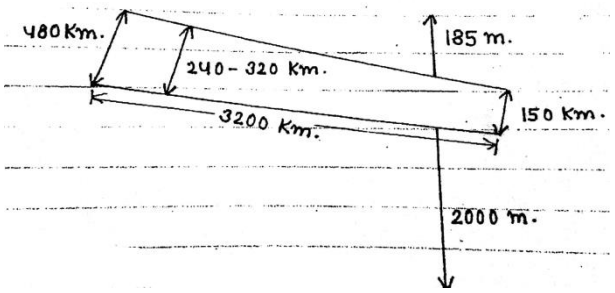

- यह प्रदेश 7 लाख वर्ग किमी. क्षेत्र में विस्तृत है ।
- इस मैदानी प्रदेश की चौडाई लगभग 240–320 किमी. पाई जाती है ।
- इन मैदानों में जलोढ अवसादों का जमाव 2000 मी. की गहराई तक पाया जाता है ।
- यह समतल मैदान है जिनका ढाल मन्द है ।

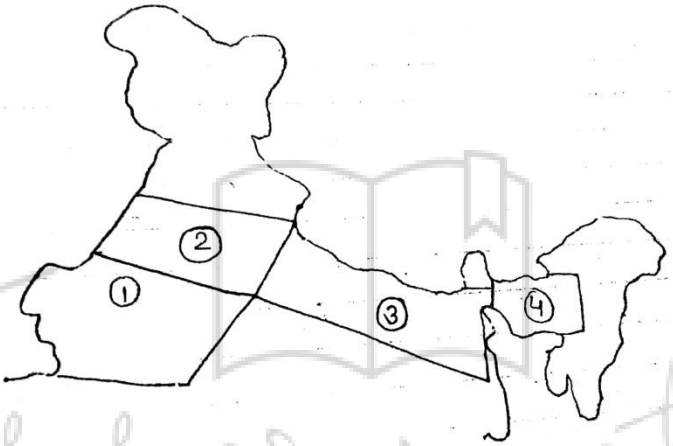

1. राजस्थान के मैदान:–

- राजस्थान में अरावली पर्वतों के पश्चिम में स्थित मैदानी क्षेत्र।
- इस क्षेत्र में शुष्क एवं अर्द्धशुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है ।
- वर्षा के आधार पर इस भाग को दो उपभागों में विभाजित किया जाता है ।

(i). अरावली पर्वत तथा 25 सेमी. समवर्षा रेखा के मध्य स्थित भाग में अर्द्धशुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है तथा यह भाग 'राजस्थान बागर' कहलाता है । (25 से 50 सेमी. वर्षा)

(ii). 25 सेमी. समवर्षा रेखा तथा 'रेड क्लिफ रेखा' के मध्य स्थित भाग, जहाँ मरूस्थलीय परिस्थितियाँ पाई जाती है तथा यह क्षेत्र 'मरूस्थलीय' कहलाता है । (25 सेमी. से कम वर्षा)

- 'लूनी' इस मैदानी क्षेत्र की सबसे प्रमुख नदी है, जोकि उत्तर–पूर्व से दक्षिण–पूर्व दिशा की ओर बहती है ।
- इस क्षेत्र में बहुत सी लवणीय झीलें पाई जाती है । जैसे:– सांभर, लूणकरणसर, डीडवाना,पचपदरा

2. सतलज के मैदान:–

- इस मैदानी क्षेत्र का निर्माण सतलज, रावी तथा व्यास नदियों द्वारा किया गया है तथा यह मुख्य रूप से पंजाब व हरियाणा राज्यों में स्थित है ।
- इस मैदानी क्षेत्र में नदियाँ 'दोआब' का निर्माण करती है ।
- व्यास व रावी के मध्य क्षेत्र – बारी दोआब
- व्यास व सतलज के मध्य – बिस्त दोआब
- इस मैदानी क्षेत्र में नदियाँ उत्तर–पूर्व से दक्षिण–पश्चिम की ओर बहती है ।

- सतलज तथा घग्घर नदी के मध्य स्थित मैदानी क्षेत्र 'मालवा के मैदान' कहलाता है । जबकि घग्घर तथा यमुना नदी के मध्य स्थित मैदानी भाग 'हरियाणा–भिवानी बागर' कहलाता है ।
- यह भारत का सर्वाधिक कृषि उत्पादकता **(Productivity–** कृषि क्षमता अधिक**)** वाला क्षेत्र है । (सतलज क्षेत्र)

3.गंगा का मैदानः–

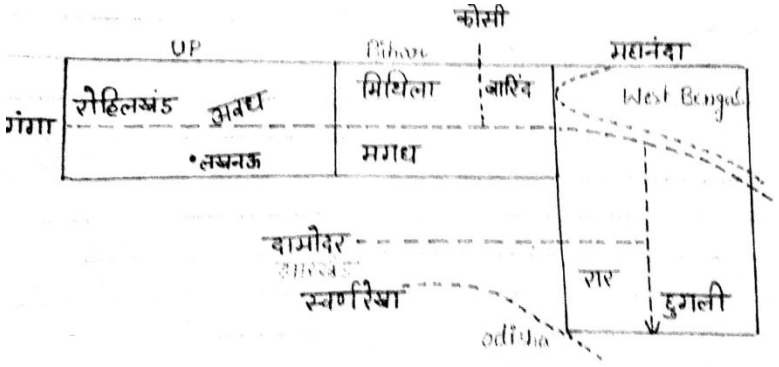

- इस मैदान का निर्माण गंगा तथा इसकी सहायक नदियों द्वारा होता है ।
- इस मैदान का ढाल **NW** से **SE** की ओर है ।
- यह मैदान मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, बिहार तथा पश्चिम बंगाल में स्थित है ।
- इस मैदान के विभिन्न प्रादेशिक नाम हैः–

1. उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग में – रोहिलखण्ड
2. लखनऊ के पास – अवध के मैदान
3. बिहार में गंगा के उत्तर में – मिथिला
4. बिहार में गंगा के दक्षिण में – मगध
5. कोसी तथा महानंदा नदी के बीच – बारिंद
6. दामोदर तथा स्वर्णरेखा नदी के बीच – रार

- यह भारत के सबसे विस्तृत मैदान है तथा यहाँ सर्वाधिक उत्पादन पाया जाता है ।

4. ब्रह्मपुत्र के मैदानः–

- इस मैदान का निर्माण ब्रह्मपुत्र तथा उसकी सहायक नदियों के द्वारा होता है ।
- इस मैदान का ढाल उत्तर–पूर्व से दक्षिण–पश्चिम की ओर है ।
- यह मैदान मुख्य रूप से असम में स्थित है ।
- यह संकरे मैदान है ।
- इन मैदानों का उपयोग चावल तथा पटसन (जूट) की खेती के लिए किया जाता है ।

अन्य दोआबः–

- सिन्धु सागर दोआब – सिन्धु
- छाज –झेलम
- रेचना – चिनाब
- बारी – रावी

- बिस्त – व्यास सतलज

संरचना के आधार पर मैदानों का विभाजनः–

संरचना के आधार पर उत्तरी मैदानी प्रदेश को निम्न भागों में विभाजित किया जा सकता है । :–

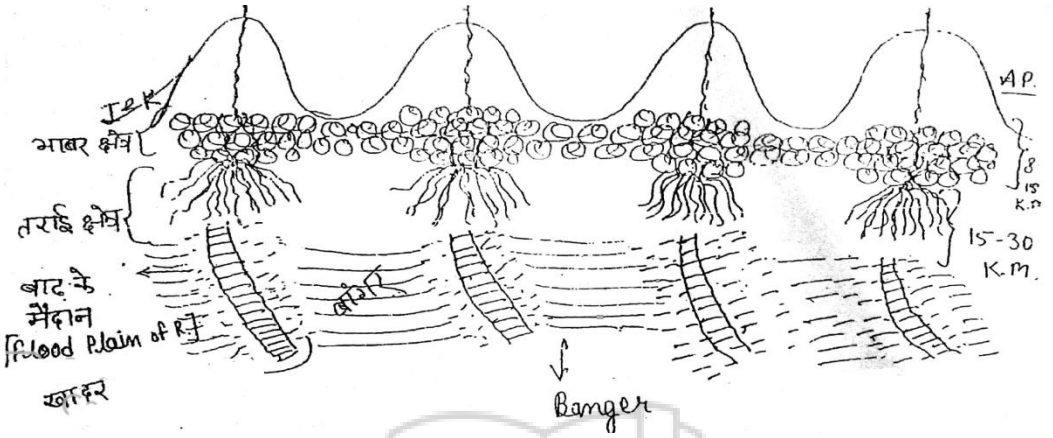

1. भाबर के मैदानः–

- हिमालय पर्वतों के पदेन क्षेत्रों में नदियों द्वारा जमा किये गये बडे अवसादों से 8 से 15 किमी. की चौडाई वाला पट्टीनुमा मैदानी क्षेत्र 'भाबर' कहलाता है ।
- यह क्षेत्र जम्मू–कश्मीर से लेकर अरूणाचल तक विस्तृत है ।
- इन क्षेत्रों में नदियाँ बडे अवसादों के नीचे से होते हुए आगे की ओर बढती है, तथा सतह पर अदृश्य हो जाती है ।

(a). तराई क्षेत्रः–

- भाबर क्षेत्र के दक्षिण में 15–30 किमी. की चौडाई में विस्तृत क्षेत्र जहाँ गहन वनस्पति तथा विविध वन्य जीव पाये जाते है, वह 'तराई क्षेत्र' कहलाता है ।
- पंजाब तथा उत्तर प्रदेश में इस क्षेत्र का उपयोग वर्तमान में गेहूँ तथा गन्ना की खेती के लिए किया जा रहा है तथा तराई क्षेत्र देश के पूर्वी भागों तक ही सीमित रह गया है ।

(b). खादर के मैदानः–

- नदियों के बाढ के मैदानों में हर वर्ष मानसून के दौरान नदियाँ बाढ लेकर आती है तथा इन क्षेत्रों में नये जलोढ अवसाद जमा करती है ।
- यही नये जलोढ अवसादों से बने मैदानी क्षेत्र 'खादर के मैदान' कहलाते है ।
- ये सर्वाधिक कृषि उत्पादकता **(Productivity)** वाले क्षेत्र है ।